भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

सम्पादक :
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2024

ISBN : 978 - 81 - 89435 - 66 - 0

मूल्य - 300/-

रचना - भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

जॉन डीवी का शिक्षा दर्शन

राहुल कुमार
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों से जुड़ी होती है। उनका मानना था कि शिक्षा जन्म से ही शुरू हो जाती है और व्यक्ति की शक्तियों, आदतों, विचारों और भावनाओं को आकार देती है। इस प्रक्रिया से व्यक्ति समाज की सभ्यता और नैतिक संसाधनों का हिस्सा बनता है।

डीवी के अनुसार सच्ची शिक्षा वही है जो बच्चों को समाज में सक्रिय भागीदार बनने, अपने समूह के कल्याण के लिए सोचने और अपने अनुभवों से सीखने का अवसर दे। उन्होंने शिक्षा और समाज के बीच गतिशीलता पर जोर दिया और इसे अनुभवों के सतत नवीनीकरण से जोड़कर देखा।

जॉन डीवी का जन्म 1859 में अमेरिका के वारमॉण्ट के बलिंगटन में हुआ। उनके पिता एक दुकानदार और माता आशावादी स्त्री थीं। प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद डीवी ने उच्च शिक्षा की ओर कदम बढ़ाया और 1879 में वारमॉण्ट विश्वविद्यालय से बी.ए. की डिग्री प्राप्त की।

जॉन डीवी दर्शन के प्रतिभाशाली छात्र थे और उन्होंने प्लेटो, हीगल, कान्ट, डार्विन आदि दार्शनिकों के विचारों का गहन अध्ययन किया। उन्होंने कान्ट के दार्शनिक विचारों पर शोध कर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। प्रारंभ में उनके प्रोफेसर एस. मॉरिस के प्रभाव से उन्होंने हीगल के आदर्शवादी विचार माने, फिर डार्विन से प्रभावित होकर प्रकृतिवाद अपनाया। बाद में विलियम जेम्स के प्रयोजनवाद का सबसे अधिक प्रभाव उनके विचारों पर पड़ा, जिसके कारण डीवी आज प्रयोजनवादी दार्शनिक के रूप में प्रसिद्ध हैं।

डीवी के दार्शनिक चिन्तन को तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा और आचारमीमांसा के दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं: दार्शनिक विचारों पर डार्विन का प्रभाव, प्रायोगिक तत्त्वशास्त्र पर निबंध, दर्शन की पुनर्रचना, अनुभव एवं प्रकृति, निश्चिति की खोज, तत्त्वशास्त्र: अन्वेषण सिद्धांत, मूल्यांकन का सिद्धांत।

जॉन डीवी का दर्शन उपकारवाद और प्रयोगवाद पर आधारित है। उनका मानना था कि केवल वही ज्ञान सत्य है जिसका मानव जीवन में प्रयोगात्मक उपयोग हो। उनके अनुसार सत्य की खोज क्रियाओं और उनके परिणामों से होती है; क्रिया से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से सत्य का निर्णय होता है।

डीवी शाश्वत सत्यों में विश्वास नहीं करते थे। वे मानते थे कि संसार परिवर्तनीय है, इसलिए शिक्षा को भी व्यावहारिक और सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए। शिक्षा अनुभव आधारित होनी चाहिए, जिसमें अनुभव का क्रियात्मक पक्ष परिवर्तन लाता है और निष्क्रिय पक्ष परिणामों का अनुभव कराता है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बच्चे में उन क्षमताओं का विकास करना है जो उसे अपने वातावरण को समझने और अपनी संभावनाओं को पूर्ण करने योग्य बनाएं।

संक्षेप में, डीवी के अनुसार शिक्षा जीवन की सतत प्रक्रिया है, जो अनुभवों और क्रियाओं के माध्यम से व्यक्ति को समाज में कुशल, स्वतंत्र और प्रभावशाली बनाती है।

जॉन डीवी, अमेरिकी शिक्षक और शैक्षिक चिंतक, शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान या भविष्य की तैयारी के रूप में नहीं देखते थे। उनके अनुसार शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया और जीवन की क्रिया है। यह जन्म से ही अचेतन रूप से प्रारंभ हो जाती है और व्यक्ति के अनुभवों, आदतों, विचारों तथा भावनाओं को आकार देती है। डीवी का मानना था कि शिक्षा का असली उद्देश्य व्यक्ति की शक्तियों का विकास और समाज के कल्याण में उसकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना है।

डीवी ने शिक्षा के अनुभवात्मक पक्ष पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार, ज्ञान क्रियाओं और अनुभवों से प्राप्त होता है, और यही अनुभव व्यक्ति को वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़ते हैं। शिक्षा केवल बौद्धिक पक्ष तक सीमित नहीं होनी चाहिए; इसे शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक पक्षों से भी जोड़ना आवश्यक है। शिक्षा का यह व्यापक दृष्टिकोण बच्चे को जीवन की विविध परिस्थितियों में कुशल और सक्षम बनाता है।

डीवी का शिक्षा दर्शन प्रयोजनवाद (प्रैग्मेटिज्म) पर आधारित है। वे शाश्वत और अपरिवर्तनीय सत्यों में विश्वास नहीं करते थे, बल्कि वही सत्य मानते थे जिसका व्यावहारिक जीवन में उपयोग हो। उनका यह दृष्टिकोण बच्चों को परिवर्तनीय समाज में कुशल बनने, समस्याओं का समाधान खोजने और अपने अनुभवों से सीखने के लिए प्रेरित करता है।

डीवी के अनुसार शिक्षा का महत्व निम्नलिखित है-

(1) दृष्टिकोण :- शिक्षा ज्ञान का परिणाम नहीं, बल्कि ज्ञान की उपज है।

(2) विकासात्मक पक्ष :- शिक्षा का अर्थ व्यक्ति के संपूर्ण विकास और सामर्थ्य का निर्माण है।

(3) क्रियात्मक ज्ञान :- ज्ञान क्रियाओं और अनुभवों के माध्यम से ही प्राप्त होता है।

(4) जीवन से संबंध :- शिक्षा जीवन का अभिन्न अंग है, इसे केवल भविष्य के लिए उपकरण मानना अनुचित है।

(5) प्रजातांत्रिक स्वरूप :- शिक्षा सभी के लिए जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे लोकतांत्रिक ढंग से संचालित किया जाना चाहिए।

(6) सामाजिक प्रक्रिया :- शिक्षा समाज और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप होनी चाहिए।

(7) अनुभवों की पुनरावृत्ति :- शिक्षा सतत् अनुभवों के पुनर्गठन और परीक्षण से प्राप्त होती है।

जॉन डीवी के अनुसार, शिक्षा का कोई निश्चित या स्थायी उद्देश्य नहीं होता। उनका मानना था कि जीवन के मूल्य और सत्य समय, स्थान और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं। इसी कारण, शिक्षा का उद्देश्य भी स्थिर नहीं रह सकता, बल्कि यह व्यक्ति की बदलती क्षमताओं और सामाजिक-परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

डीवी के अनुसार शिक्षा का कोई अंतिम या सार्वभौमिक उद्देश्य नहीं है। यदि इसे सामान्य उद्देश्य में संक्षेपित किया जाए, तो वह है उपयोगिता पर परखी हुई शिक्षा का सतत विकास। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा लगातार अनुभव, क्रियाओं और सामाजिक संदर्भ के माध्यम से विकसित होती रहती है।

शैक्षिक उद्देश्य केवल शब्दों या नारों में नहीं, बल्कि अध्यक्षों, छात्रों और अभिभावकों के व्यवहार, अनुभव और उपलब्धियों में प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होते हैं। शिक्षा का वास्तविक मूल्य तभी समझा जा सकता है जब वह मानव जीवन के अनुभवों और सामाजिक कायोज़ं में प्रतिबिंबित हो।

जॉन डीवी के अनुसार, शिक्षा एक अनिवार्य सामाजिक प्रक्रिया है। समाज के बिना शिक्षा के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि शिक्षा ही सभ्यता के संरक्षण और विकास का आधार है। डीवी के विचार में शिक्षा अनुभवों का सतत् पुनरावलोकन और पुनर्निर्माण है, जो व्यक्ति की क्षमताओं को बढ़ाने और अनुभवों को सामाजिक रूप से अधिक उपयोगी बनाने का कार्य करती है।

मानव के बाह्य और आंतरिक अनुभव समय-समय पर बदलते रहते हैं। इसी अनुसार उसकी क्रियाएँ और व्यवहार भी बदलते रहते हैं। ड्यूई इसे अनुभव का

संशोधन, पुनर्गठन और पुनर्निर्माण मानते हैं और इसे ही शिक्षा कहते हैं। उनके अनुसार, शिक्षा केवल स्कूल जाने तक सीमित नहीं है; यह जन्म से शुरू होती है और जीवन भर चलती रहती है। शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं, बल्कि स्वयं जीवन है।

डीवी ने तत्कालीन शिक्षा प्रणाली की आलोचना की क्योंकि वह जनतांत्रिक जीवन से दूर और केवल पुस्तकीय होती थी। इसमें छात्र सिर्फ शिक्षक के व्याख्यान सुनते थे, जिससे उनकी बौद्धिक सक्रियता कम हो जाती थी और शिक्षा केवल कुछ लोगों तक सीमित रह जाती थी। डीवी ने इसके विपरीत प्रगतिशील शिक्षा की नींव रखी, जिसका लक्ष्य बालक के व्यक्तित्व का समग्र विकास और शिक्षा के माध्यम से जनतंत्र को सुदृढ़ करना था।

जॉन डीवी अनुसार पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल विषयों का ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन से जुड़ी क्रियाओं के माध्यम से सीखना होना चाहिए। वे पारंपरिक पाठ्यक्रम को इसलिए स्वीकार नहीं करते क्योंकि जीवन में अनुभव विषयों में विभक्त नहीं होते। उनके दृष्टिकोण में पाठ्यक्रम को छात्र-केंद्रित, लचीला और जीवनोपयोगी होना चाहिए।

ड्यूई के पाठ्यक्रम के मुख्य तत्व:

(1) ***बालक-केंद्रित** :- पाठ्यक्रम छात्रों की आवश्यकताओं और रुचियों को ध्यान में रखकर बनाया जाए।

(2) **रुचि आधारित** :- शिक्षा उन गतिविधियों पर आधारित हो जो छात्रों की स्वाभाविक रुचियों और प्रवृत्तियों से मेल खाती हों।

(3) **जीवन क्रियाओं पर आधारित** :- सीखने की प्रक्रिया वास्तविक जीवन के अनुभवों और कार्यों से जुड़ी हो।

(4) **उपयोगी** :- शिक्षा का उद्देश्य जीवन में प्रत्यक्ष उपयोगिता प्रदान करना हो।

(5) **सहसंबंधित** :- सभी विषयों और क्रियाओं में आपसी संबंध हो ताकि सीखने का अनुभव अखंड और सामंजस्यपूर्ण हो।

(6) **लचीली** :- पाठ्यक्रम परिस्थितियों, समय और छात्रों की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलनीय हो।

डीवी का यह दृष्टिकोण शिक्षा को स्थिर और शाब्दिक ज्ञान से परे, जीवनोपयोगी और अनुभव आधारित बनाता है।

जॉन ड्यूई के अनुसार मानव ज्ञान और संस्कृति का विकास मानव गतिविधियों— अन्न, वस्त्र, निवास आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति और संघर्ष के माध्यम से हुआ है। उन्होंने यह बताया कि लगातार प्रयत्न, समस्याओं का सामना और सामाजिक संघर्ष ही ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी प्रगति, सामाजिक संस्थाओं, भाषा, साहित्य और कलाओं के

विकास का आधार हैं। इसे उन्होंने 'कल्चर इपोक सिद्धांत' के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें बालक का समग्र विकास भी इन्हीं मानवीय गतिविधियों और जातीय प्रवृत्तियों के अनुकरण द्वारा होता है।

डीवी का पाठ्यक्रम लोकतांत्रिक समाज के लिए शिक्षा की अनिवार्यता पर आधारित है। उनकी पुस्तक 'लोकतंत्र और शिक्षा' में उन्होंने दिखाया कि कैसे शिक्षा के माध्यम से समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि शिक्षा को ज्ञान, नैतिक विकास और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से लोकतांत्रिक आदर्शों के अनुरूप ढाला जाना चाहिए।

इस प्रकार, जॉन ड्यूई का शिक्षा-दर्शन मानवीय गतिविधियों, अनुभव और समाज के परिप्रेक्ष्य में विकसित होता है, जो केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं, बल्कि वैश्विक और सामाजिक रूप से समग्र होता है।

शिक्षण विधि :- जॉन डीवी की शिक्षण विधि का मूल विचार बालक-केंद्रित और अनुभव-संरचित शिक्षा है। उनके अनुसार शिक्षा का सर्वोत्तम तरीका यह है कि बालक स्वयं सक्रिय होकर काम करे और सीखें। शिक्षक का कार्य केवल भाषण या व्याख्यान देना नहीं है, बल्कि बालक को ऐसे कार्यों में संलग्न करना है जिससे उसकी विभिन्न क्षमताओं और शक्तियों का स्वाभाविक विकास हो।

मुख्य बिंदु :-

(1) करकर सीखना :- बालक को केवल पढ़ाया नहीं जाता, बल्कि उसे विभिन्न कार्यों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के अवसर दिए जाते हैं।

(2) व्यावहारिक समस्याओं का समाधान :- बालक को समस्याओं को हल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे उसका अनुभव और सोचने की क्षमता विकसित होती है।

(3) जीवन-केंद्रित शिक्षा :- शिक्षा वास्तविक जीवन से जुड़ी होनी चाहिए। जो कुछ भी सिखाया जाए, वह बालक के दैनिक जीवन और वास्तविक क्रियाओं से संबंधित होना चाहिए।

(4) अनुभव से सीखना :- दैनिक जीवन में निरीक्षण और परीक्षण बालक के अनुभव का मुख्य स्रोत होते हैं। यह ज्ञान केवल औपचारिक पुस्तकीय शिक्षा तक सीमित नहीं होता, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के माध्यम से फैलता है।

(5) समूह आधारित ज्ञान :- बालक का ज्ञान समूह और समाज की गतिविधियों, व्यवसायों, परंपराओं और भाषा के माध्यम से विकसित होता है।

संक्षेप में, ड्यूई का शिक्षण विधि प्रयोगवादी, अनुभव-संरचित और बालक-केंद्रित है, जिसमें शिक्षा केवल ज्ञानार्जन नहीं बल्कि जीवन और सामाजिक अनुभव का

विकास भी है।

जॉन डीवी के शिक्षा–दर्शन में विज्ञान और शिक्षण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने विज्ञान को केवल तथ्यों के संग्रह के रूप में नहीं, बल्कि विचार की एक प्रक्रिया के रूप में देखा। डीवी के अनुसार, विज्ञान जीवन के सामान्य अनुभव से आगे बढ़कर संबंधों और सिद्धांतों की खोज करता है। जहाँ दैनिक जीवन में व्यक्ति वस्तुओं के प्रत्यक्ष उपयोग और गुणों पर ध्यान देता है, वहीं विज्ञान उन वस्तुओं के अंतर–संबंधों और कारण–परिणामों को समझने का प्रयास करता है।

डीवी का मत है कि जब हम दैनिक अनुभवों से विज्ञान की ओर बढ़ते हैं, तो हमारी सोच की दिशा बदल जाती है। दैनिक जीवन में गुणात्मकता और प्रयोजनात्मकता प्रमुख होती है—अर्थात् हम चीजों का मूल्य उनके उपयोग के आधार पर आंकते हैं। लेकिन विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश करते ही अगुणात्मकता और अप्रयोजनात्मकता विकसित हो जाती है, जहाँ वस्तुओं को केवल प्रयोग के साधन के रूप में लिया जाता है, और प्रमुख ध्यान उनके संबंधों, नियमों और सिद्धांतों पर केंद्रित होता है।

डीवी के इन विचारों के आधार पर ही उनके प्रसिद्ध शिष्य विलियम किलपैट्रिक ने 'प्रोजेक्ट पद्धति' का विकास किया। इस पद्धति ने डीवी के 'करके सीखने' और 'अनुभव–आधारित शिक्षा' के विचारों को व्यावहारिक रूप दिया।

प्रोजेक्ट पद्धति की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं —

(1) प्रोजेक्ट का चयन :- सबसे पहले किसी वास्तविक समस्या या कार्य (प्रोजेक्ट) का चयन किया जाता है। यह चयन विद्यार्थियों की रुचि और सामाजिक उपयोगिता को ध्यान में रखकर किया जाता है।

(2) योजना निर्माण :- इसके बाद प्रोजेक्ट को पूरा करने की विस्तृत योजना बनाई जाती है, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी दोनों की समान भागीदारी होती है।

(3) कार्य निष्पादन :- विद्यार्थियों द्वारा स्वावलंबनपूर्वक योजना के अनुसार कार्य किया जाता है। शिक्षक मार्गदर्शक और सहयोगी के रूप में उपस्थित रहता है, किन्तु वह प्रत्यक्ष नियंत्रण नहीं रखता।

(4) मूल्यांकन :- प्रोजेक्ट पूरा होने पर उसका मूल्यांकन किया जाता है — क्या उद्देश्य पूरे हुए, कौन–से अनुभव प्राप्त हुए, और क्या सुधार आवश्यक हैं।

(5) लेखन :- अन्त में विद्यार्थी अपने अनुभवों, प्रक्रियाओं और निष्कर्षों को लेखबद्ध करते हैं। यह लेखन उनकी आत्मचिन्तनशीलता और सृजनात्मकता का प्रतीक होता है। शिक्षक इस लेखन के आधार पर विद्यार्थियों के विकास का मूल्यांकन करता है।

इस प्रकार, प्रोजेक्ट प्रणाली डीवी के शिक्षण सिद्धांतों का व्यावहारिक रूप है।

यह पद्धति बालक को निष्क्रिय श्रोता न बनाकर सक्रिय कर्मशील बनाती है। यह न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि विचार, योजना, सहयोग, प्रयोग और आत्ममूल्यांकन जैसी जीवनोपयोगी क्षमताओं का भी विकास करती है।

डीवी और किलपैट्रिक की यह शिक्षण प्रणाली शिक्षा को जीवन से जोड़ने वाली, लोकतांत्रिक भावना को पोषित करने वाली और अनुभव को ज्ञान में रूपांतरित करने वाली एक सजीव प्रक्रिया है — जहाँ शिक्षा, वास्तव में, जीवन का ही दूसरा नाम है।

डीवी का शिक्षण सिद्धांत आधुनिक शिक्षा दर्शन में अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है। उन्होंने शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान न मानकर, जीवन के अनुभवों से जोड़ा। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य अनुभवों का पुनर्गठन है, और इस पुनर्गठन के लिए विचार प्रक्रिया को वैज्ञानिक ढंग से प्रयुक्त करना आवश्यक है। इसीलिए उन्होंने प्रयोग-विधि या वैज्ञानिक विधि को शिक्षा में अपनाने पर बल दिया, जो आगे चलकर समस्या-समाधान विधि और प्रोजेक्ट विधि के रूप में विकसित हुई।

समस्या-समाधान विधि में बालक को किसी समस्या का ज्ञान कराया जाता है, फिर वह परिस्थितियों का निरीक्षण करता है, संभावित समाधानों की कल्पना करता है, परिकल्पना की जांच करता है और अंत में परिणामों की समीक्षा करता है। इस विधि में शिक्षा तर्क और प्रयोग पर आधारित होती है, जिससे बालक में विवेक, विश्लेषण और निर्णय क्षमता का विकास होता है।

डीवी के शिष्य किलपैट्रिक ने इसी विचार को आगे बढ़ाकर प्रोजेक्ट पद्धति का निर्माण किया। इसमें शिक्षा को किसी व्यावहारिक प्रोजेक्ट के माध्यम से दिया जाता है। प्रोजेक्ट का चयन शिक्षक और छात्रों की सहमति से होता है, उसकी योजना बनाई जाती है, छात्र स्वयं कार्य करते हैं, फिर मूल्यांकन और लेखन द्वारा अनुभव को स्थायी बनाया जाता है। इस पद्धति में छात्र सक्रिय भूमिका निभाता है जबकि शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका में रहता है।

डीवी ने 'हाउ वी थिंक' और 'इंटरेस्ट एंड एफर्ट इन एजुकेशन' जैसी पुस्तकों में यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य विचारशीलता, प्रयोगशीलता और आत्मनिर्भरता का विकास है। उनके अनुसार 'करके सीखना' ही सच्ची शिक्षा है, क्योंकि इससे छात्र केवल ज्ञान अर्जित नहीं करता, बल्कि उसे व्यवहार में भी लाता है।

अत: डीवी की शिक्षण पद्धति पारंपरिक शिक्षा से भिन्न है। यह छात्र को निष्क्रिय श्रोता नहीं, बल्कि सक्रिय सहभागी बनाती है। शिक्षक केवल परिस्थितियाँ निर्मित करता है, जिससे छात्र स्वयं समस्या को पहचानकर अनुभव के माध्यम से समाधान खोजे। इस प्रकार डीवी की शिक्षा जीवन से जुड़ी, वैज्ञानिक और अनुभवात्मक

शिक्षा का प्रतीक बन जाती है।

जॉन डीवी के अनुसार शिक्षक शिक्षा-प्रक्रिया का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि वही बालक और समाज के बीच सेतु का कार्य करता है। डीवी ने शिक्षक की भूमिका को केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, सहायक और प्रेरक के रूप में देखा। उन्होंने कहा कि शिक्षक को अपने छात्रों पर आदेश या उपदेश के माध्यम से अपनी बात नहीं थोपनी चाहिए, बल्कि उन्हें स्वतंत्र वातावरण में सोचने और करने की प्रेरणा देनी चाहिए। विद्यालय एक लोकतांत्रिक संस्था है, जहाँ शिक्षक और छात्र के संबंध समानता और पारस्परिक सम्मान पर आधारित होने चाहिए।

डीवी का मत था कि शिक्षक को अपने को बच्चों से बड़ा या श्रेष्ठ नहीं समझना चाहिए। वह छात्रों के जीवन में सहयात्री के रूप में कार्य करे। उसे चाहिए कि वह बालकों की रुचियों, क्षमताओं और स्वाभाविक प्रवृत्तियों का गहन अध्ययन करे और उन्हीं के अनुरूप उन्हें विभिन्न क्रियाओं में संलग्न करे। ऐसा करने से बच्चे का व्यक्तित्व स्वाभाविक रूप से विकसित होता है और विद्यालय का संचालन भी सरल और प्रभावी बन जाता है।

डीवी के अनुसार शिक्षक का दायित्व केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि बालकों में सोचने-विचारने की शक्ति का विकास करना है। उसे बच्चों के सामने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए, जिनमें वे समस्याओं को पहचानें, उनका विश्लेषण करें और समाधान खोजने के लिए प्रयोग करें। इस प्रक्रिया में छात्र सक्रिय शिक्षार्थी बनता है और उसकी मानसिक क्षमताएँ, सृजनशीलता तथा विवेकशीलता विकसित होती हैं।

डीवी के अनुसार एक सफल शिक्षक में दो विशेषताएँ होना आवश्यक है —

पहली, छात्रों की रुचियों, आवश्यकताओं और भावनाओं को समझने की संवेदनशीलता, और दूसरी, समाज में हो रहे परिवर्तनों के प्रति सजगता। शिक्षक को यह समझना चाहिए कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का विकास भी है। अत: उसे छात्रों के समक्ष ऐसे अनुभव और परिस्थितियाँ प्रस्तुत करनी चाहिए जो उनमें सामाजिक दृष्टिकोण, सहयोग, सहिष्णुता और उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करें।

इस प्रकार जॉन डीवी के अनुसार शिक्षक शिक्षा का 'निर्देशक' नहीं बल्कि 'सहायक' होता है। वह बच्चों में निहित संभावनाओं को पहचानकर उन्हें सही दिशा देता है। विद्यालय में उसका व्यवहार लोकतांत्रिक, स्नेहमय और प्रेरणादायी होना चाहिए। यही वह दृष्टिकोण है, जिससे डीवी की शिक्षा-संस्था एक जीवंत प्रयोगशाला बन जाती है, जहाँ शिक्षक और छात्र दोनों सीखने की प्रक्रिया के सक्रिय सहभागी होते हैं।

जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया का केंद्र 'चिंतन' है। उनका मत था कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चिंतनशील जीवन का अभ्यास है। चिंतन शिक्षा के अनुभव की संगठित प्रणाली है, जिससे विद्यार्थी अनुभवों का विश्लेषण कर नए निष्कर्ष निकालते हैं। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में विचारशीलता और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित करना होना चाहिए।

डीवी मानते हैं कि शिक्षण की परिस्थितियाँ जीवन से संबंधित और स्वाभाविक हों, कृत्रिम नहीं। बालक वास्तविक अनुभवों और प्रयोगों से ही चिंतन करना सीखता है। विद्यालय जीवन का प्रतिरूप होना चाहिए, जहाँ विद्यार्थी समस्याओं का समाधान करते हुए सीखें।

वे कहते हैं कि श्रेष्ठ शिक्षा वही है जो दैनिक जीवन की वास्तविकताओं से जुड़ी हो। डीवी के अनुसार चिंतन विद्यार्थियों को सक्रिय, सृजनशील और विवेकशील व्यक्तित्व बनाता है, जो लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में योगदान देता है।

जॉन डीवी के शिक्षा-दर्शन का मूल सार यह है कि शिक्षा जीवन का पर्याय है, न कि केवल जीवन की तैयारी। उनका मत था कि विद्यालय समाज का एक लघुरूप है, जहाँ बालक सामाजिक अनुभव प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। डीवी ने शिक्षा को 'जीवन जीने की निरंतर प्रक्रिया' कहा, जो व्यक्ति को समाज के साथ अंत:क्रिया द्वारा आगे बढ़ने का अवसर देती है।

उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में निहित क्षमताओं का समाजोपयोगी विकास है। शिक्षक इस प्रक्रिया में मार्गदर्शक, प्रेरक और सहयोगी की भूमिका निभाता है न कि आदेश देने वाला। डीवी ने शिक्षक को 'ईश्वर का दूत' और 'जीवनरूपी नैया का खिवैया' कहा, जो विद्यार्थियों को सही दिशा में ले जाता है।

डीवी का शिक्षा-दर्शन अनुभव और क्रिया पर आधारित है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का कार्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि अनुभवों को पुनर्गठित कर व्यक्ति को विचारशील, व्यावहारिक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनाना है। इस दृष्टि से, शिक्षा व्यक्ति और समाज के बीच सेतु का कार्य करती है।

इस प्रकार, डीवी के अनुसार शिक्षा का मूल्यांकन उसकी सामाजिक उपयोगिता, अनुभवात्मकता और जीवन से जुड़ाव पर आधारित होना चाहिए। उनके विचारों ने शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान से निकालकर एक गतिशील, जीवंत और प्रयोगशील प्रक्रिया के रूप में प्रतिष्ठित किया।

❑❑❑